Date – 16/09/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Types of perception : Leibnitz

Scanned with CamScanner

(i) अचेतन मोनड (Unconsciousness) – इसमें चेतना सुषुप्त अवस्था में रहती है। यहाँ चेतना का अभाव नहीं बल्कि चेतना सीमा रूप में विद्यमान रहती है। भौतिक प्रतीत होने वाले पदार्थ जैसे लकड़ी, मिट्टी आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

(ii) अवचेतन (Sub-Consciousness) – इसमें अचेतन मोनड की अपेक्षा अधिक मात्रा में चैतन्य पाया जाता है। उदाहरणस्वरूप – वनस्पति जगत।

(iii) चेतन (Consciousness) – इस स्तर पर चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। इसके अन्तर्गत पशु-पक्षी आदि आते हैं।

(iv) स्वचेतन (Self Consciousness) – इस श्रेणी के अन्तर्गत मानव आते हैं। इनमें इच्छात्मक उद्देश्यपूर्ण व्यापार देखा जाता है।

(v) परमाणु (Supreme Monad) – यह पूर्ण चेतन अवस्था है। यह परम चिदणु ही लाइबनित्ज का ईश्वर है। लाइबनित्ज इसे 'मोनडों का मोनड' (Monad Monadum) कहते हैं।

Scanned with CamScanner

मौनड की विशिष्टता एवं विविधता ही लाइबनित्ज विश्व की विविधता की व्याख्या कर देते हैं, किंतु विश्व की विविधता के साथ ही एकता और सामंजस्य की प्रकृति का नियम है। सृष्टि में एकरूपता, व्यवस्था और नियमबद्धता की व्याख्या कैसे हो? मन और शरीर के मौनड में परस्पर सम्बन्ध कैसे हो सकता है? लाइबनित्ज इसकी व्याख्या एवं स्थापना 'पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम' (Pre-established Harmony) से करते हैं।

इस नियम के अनुसार ईश्वर यद्यपि मौनडों का स्रष्टा है और उन्हें स्वतंत्र बनाया है फिर भी उसने उन्हें एकतन्त्रता के सूत्र में बाँध दिया है। विभिन्न मौनडों का निर्माण करते समय ही ईश्वर ने उनमें ऐसी व्यवस्था या सामंजस्य स्थापित कर दिया कि परस्पर स्वतंत्र होते हुए भी उनमें एक प्रकार की व्यवस्था पायी जाती है। इस सार्वभौम ईश्वरीय नियम को ही लाइबनित्ज ने 'पूर्व स्थापित सामंजस्य' (Pre-established Harmony) कहा है।

लाइबनित्ज इस नियम को स्पष्ट करने के लिए आर्केस्ट्रा (Orchestra) का उदाहरण दिया है। आर्केस्ट्रा में कई वाद्य यंत्र होते हैं। जब वे कोई तान छेड़ते हैं तो इनमें से प्रत्येक वाद्य यंत्र वादक केवल अपनी क्रिया पर ध्यान देता है, वह दूसरों पर प्रतिक्रिया नहीं करता। फिर भी उन सबके मेल से एक तान निकलता है। इसी प्रकार सभी मौनड अपनी शक्तियों के कारण क्रियाशील रहते हैं, परन्तु मौनडों की यह क्रिया ईश्वर के चरम लक्ष्य से समन्वित होकर एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से संचालित होती है।

Scanned with CamScanner